

DPN 5973

Title : मन्त्र सफ़् MANTRA SAPTHU

Run. No. 6664

Cat. No.

Micro. No.

Subject मन्त्र Mantra

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 16 X 6.5

Folios 9

Lines (in a page) 8

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

फणीन्द्ररत्न वज्राचार्य

Ruler / place

Phaniendra Ratna Vajracarya

Date: NS / SS / VS / KS

Script : New. / Dev. / Bhuja. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaasaphu /

लिपि : ब्रह्महोषण गुटिका जेठु (विषय १६)

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Remark: Name same as that of

Beginning, colophon, post-colophon :

foregone Candamaharasa
Guthika

मन्त्र सफू

फरणी नरत्न वज्राचार्य

मथखल वरुपात्ति

मथखल वरुपात्ति

मथखल

मन्त्र सफू

फरसी नुरान वज्राचार्य

३

३

लस्यवहि ॥ धनजापयाय ॥ वलिविर ॥ उ च लु महारोषसा आगह इ देवलियकाः सिद्धि
 देहि कुं फर ॥ धनसो नयाय ॥ अ वनि नोहि तवा मजा लस्यवहि च वरौ लदिक
 करमुहे मर्जनी राक्षि पाश ॥ निर्वित धनरा रीर च योयं च य च झू लमय पु नववि
 प्र विभ्र ह्नां च नो श्री ॥ २ ॥ अथ साधन माह ॥ स्वर्ग पचर गये न सिले नाना ॥ च न ले
 प नया ५० नहा जोर पाओ स्वर्ग का ल्ये गमक पाई नित्यं किन स्वपो रज पल पं थक व
 च च वर स कुं च छि गये पु कि सि कुं न जायाय श्व ते न सिद्धि कुं ५ ॥ उ च लु महा
 रोष ॥ आगह २ स्वर्ग सिद्धे कुं फर ॥ ल म ल स धन याय ॥ श्व रथ श नो ॥ ज म र आ
 दिन दय के पु न कुं ॥ ग न्ध आ दिन पो न दय के ॥ गरु उ दय के कु मि ल या चो न

शकिनी ३

४

भुरा देवादि दय के दे व दारु ॥ राक्षसादि दय के श्म रा नयान लि ना विर ला द
 य के पु न ॥ मनु श दय के म द न फ र ल सि न श नो ॥ ग ला प ति दय के द ते न ॥ रा र्वा
 त सि न दय के पि रा च पो र ॥ दय के रौ री चै री धा या वि स न ग ॥ रा म
 का म दे व दय के म नू से को च न ॥ वा ल कि आ दिन दय के रू प स्थान
 लि श नो ॥ रा न ति आ दिन दय के अ श्व य सि न ॥ श्री देवी आ दिन दय के उ र
 सि न ॥ रा जा दि दय के दे व दारु ॥ श्व ते म न्न न सा धन याय ॥ स्व र्ग या थो ॥ ४
 ॥ उ च लु महारोष ॥ आगह २ मू के मे सा धये कुं फर ॥ व ग लि दय के
 या ना म ग ल जो ग लि ना म का य ग ल ॥ सर्व पा प ना रा ये श्च न न क न न पा

4

3

मंत्र सप्त

हरामन्दरानि

0 cms.

5

10

15

ॐ सखवावा गुनवावा कर्षवावा उडवावा धा १

ॐ कृमासनाय दशन अभिनभा आत्मा मय वनाय कृया इक्ष नम
स्वाहा धा १

॥ मिर्जया ॥

॥ ॐ कृमाजीय नक्ष २ स्वाहा ॥ मिसाया

॥ ॐ हं उवस्व धा २१ धा ३

ॐ अक्षय रेभो सत्यं अक्षमा न केभो सत्यं नमः ॐ अक्षय
सना गोभो सत्यं असेष देवेभो सत्यं ॐ सत्यं नमः स्वाहा

ॐ अक्षय हरण नम अक्षमालका ख सख अक्षकृ जनाग ख
सख ३ नम स्वाहा ॥ धा १ ॥ ॐ धृज सामाय स्वाहा ॥ ॐ धृम

नृगमाय स्वाहा ॥ ॐ तिह्व धाय स्वाहा ॥ ॐ स्वान आदित्याय
स्वाहा ॥ ॐ वृषं वृहस्पतिय स्वाहा ॥ ॐ खनमनि चराय स्वाहा

ॐ गङ्गाय स्वाहा ॥ ॐ धृक नाद्र कठुलः स्वाहा ॥

ॐ क्वाचि ३ धा १ पदरागीन्द्ररत्न वज्राचार्य

जिह्वाधा ३४ सिद्ध कायधा ३५ दाक ॥ गीचधा ३६ गग ॥ त्रसधा ३७ तडस ॥
 स्यामधा ३८ दह ॥ स श्रापधा ३९ वनति मनधा ४० वाय ॥ ॐ तिदमधा ४१
 नगस्याध ४२ नलसमकसगध ४३ गह ४४ नगस्याध ४५ वनति स कर्तमान
 स ४६ खजाली ४७ नगशक रुवति वधन ४८ नगशकान वध लु वा स वत रुसम
 विकर्त दकि ४९ वे पत्रिथी ॥ ॥

१५

१५

ग्रामगोवर ॥ कृतिवादि नक्षत्राणि विंशत्येकं दभागकं ॥ ग्राहयन्
 मूनिभागेण सधेराफलमुच्यते ॥ १ एकेन स्थिरसंस्थानं २ द्वितीयेन
 त्रयंगमः ३ त्रितियादि विशेषणं चतुर्थं गृहमागतं पंचमं न त्रयजे

स्थानं षष्ठे रोगान्वित स्थितः ॥ सप्तमे धनमुत्पादं पूरुषस्य विचारयेत्
 कृत्तिकं निसे निनाबं पितृगुणं रुसन भाग सधफल ॥ १ स्थिरं च नि ॥
 २ स्थानं लोलतावल ॥ ३ त्रिदुस्वहं धन ४ छेवये धकवल ५ धातं तो
 लते मफुनि द्रोगगुयावान ॥ वलुकविंश गुयावान वये मफुसेवो

१६

१६